

---

.. jagannAtha pa.nchakam ..

॥ जगन्नाथ पंचकम् ॥

---

रक्ताम्भोरुहदर्पभञ्जनमहासौन्दर्यनेत्रद्वयं  
मुक्ताहारविलम्बिहेममुकुटं रत्नोज्ज्वलत्कुण्डलम् ।  
वर्षामिघसमाननीलवपुषं ग्रैवेयहारान्वितं  
पार्श्वे चक्रधरं प्रसन्नवदनं नीलाद्रिनाथं भजे ॥ १॥  
फुल्लेन्दीवरलोचनं नवघनश्यामाभिरामाकृतिं  
विश्वेशं कमलाविलासविलसत्पादारविन्दद्वयम् ।  
दैत्यारिं सकलेन्दुमंडितमुखं चक्राब्जहस्तद्वयं  
वन्दे श्रीपुरुषोत्तमं प्रतिदिनं लक्ष्मीनिवासालयम् ॥ २॥  
उद्यन्नीरदनीलसुन्दरतनुं पूर्णेन्दुबिम्बाननं  
राजीवोत्पलपत्रनेत्रयुगलं कारुण्यवारांनिधिम् ।  
भक्तानां सकलार्तिनाशनकरं चिन्तार्थिचिन्तामणिं  
वन्दे श्रीपुरुषोत्तमं प्रतिदिनं नीलाद्रिचूडामणिम् ॥ ३॥  
नीलाद्रौ शंखमध्ये शतदलकमले रत्नसिंहासनस्थं  
सर्वालंकारयुक्तं नवघन रुचिरं संयुतं चाग्रजेन ।  
भद्राया वामभागे रथचरणयुतं ब्रह्मरुद्रेन्द्रवंद्यं  
वेदानां सारमीशं सुजनपरिवृतं ब्रह्मदारुं स्मरामि ॥ ४॥  
दोर्भ्यां शोभितलांगलं समुसलं कादम्बरीचञ्चलं  
रत्नाढ्यं वरकुण्डलं भुजबलैराकांतभूमण्डलम् ।  
वज्राभामलचारुगण्डयुगलं नागेन्द्रचूडोज्ज्वलं  
संग्रामे चपलं शशांकधवलं श्रीकामपालं भजे ॥ ५॥  
इति श्रीजगन्नाथपञ्चकं समाप्तम् ॥

Encoded and proofread by Gayathri V vgayu at yahoo.com

## Document Info

---

<b>Text title :</b>	jagannAthapanchakam
<b>Author :</b>	
<b>Language :</b>	Sanskrit
<b>Category :</b>	panchaka
<b>Subject :</b>	philosophy \hinduism \religion
<b>Description/Comments :</b>	
<b>Transliterated by :</b>	Gayathri V vgayu at yahoo.com
<b>Proofread by :</b>	Gayathri V vgayu at yahoo.com
<b>Latest update :</b>	6 \11 \2011

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---

*Please help to maintain respect for volunteer spirit.*

---

jagannAthapanchakam.pdf  
was typeset on January 19, 2015 using XeLaTeX  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)